

English हिन्दी বাংলা తెలుగు தமிழ் ಕನ್ನಡ मराठी മലയാളം
ଓଡ଼ିଆ ગુજરાતી ਪੰਜਾਬੀ অসমীয়া اردو



मंहगी नौकरियों का ऑफर छोड़कर बच्चों की शिक्षा पर काम कर रहा है ये युवा इंजीनियर

लाखों की नौकरी छोड़ ये इंजीनियर निकल पड़ा बच्चों को पढ़ाने...



प्रज्ञा श्रीवास्तव

0

DECEMBER 07, 2017

896
SHARES

FACEBOOK

TWITTER

LINKEDIN

REDDIT

TUMBLR

एक इंजीनियर ने अपने ज्ञान और कौशल को समाज की बेहतरी में लगाने का फैसला किया है। इस नौजवान की नाम है सुरेंद्र यादव। व्यवस्था और सरकार को कोस कर आगे बढ़ जाना बहुत आसान काम होता है, असल तरक्की तब होती है जब केवल शिकायत करने की बजाय सुधार के लिए कदम उठाया जाए। यही बात सुरेंद्र के जीवन का मूलमंत्र है।

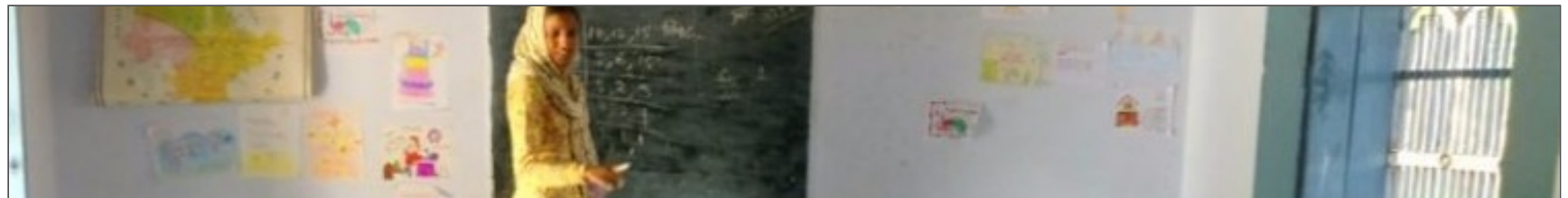




सुरेंद्र ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एसआरआई यानि कि सेल्फ रिलायंट इंडिया नाम की एक संस्था की स्थापना की। जिसके तहत वो बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करते हैं। उनकी संस्था अलग अलग जगहों पर कक्षाएं चलाती है।

सुरेंद्र ने कॉर्पोरेट नौकरी करने या आईआईटी जैसे कई अच्छे संस्थानों से एम.टेक डिग्री की पेशकश को स्वीकार नहीं करने का निर्णय लिया। उन्होंने लगता था कि समाज से अब तक लिया ही लिया है, अब देने का वक्त आ गया है। आज वो सैकड़ों बच्चों के लिए 'भैया' हैं।

एक बहुत ही प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज से बी.टेक करने के बाद किसी भी छात्र का क्या टारगेट होता है, यही न कि एक उम्दा कंपनी में ऊंचे ओहदे पर नौकरी मिल जाए, बढ़िया गाड़ी हो, घर हो और चैन की जिंदगी हो। कुछ छात्र आगे पढ़ना चाहते हैं तो एम.टेक. के लिए अप्लाई करते हैं। लेकिन इस लीक को तोड़ते हुए एक इंजीनियर ने अपने ज्ञान और कौशल को समाज की बेहतरी में लगाने का फैसला किया है। इस नौजवान का नाम है सुरेंद्र यादव। व्यवस्था और सरकार को गरियाकर आगे बढ़ जाना बहुत आसान काम होता है, असल तरक्की तब होती है जब केवल शिकायत करने की बजाय सुधार के लिए कदम उठाया जाए। यही बात सुरेंद्र के जीवन का मूलमंत्र है।





जाडरा, हरियाणा में एक क्लास



जाडरा, हरियाणा में एक क्लास

सुरेंद्र ने कॉर्पोरेट नौकरी करने या आईआईटी जैसे कई अच्छे संस्थानों से एम.टेक डिग्री की पेशकश को स्वीकार नहीं करने का निर्णय लिया। उन्होंने लगता था कि समाज से अब तक लिया ही लिया है, अब देने का वक्त आ गया है। इस डगर पर आगे बढ़ते हुए उन्होंने अगले दो साल तक गांधी फैलोशिप में शामिल होने के निर्णय के लिए ले लिया। आज वो सैकड़ों बच्चों के लिए 'भैया' हैं। सुरेंद्र ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एसआरआई यानि कि सेल्फ रिलायंट इंडिया नाम की एक संस्था की स्थापना की। जिसके तहत वो बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करते हैं। उनकी संस्था अलग अलग जगहों पर कक्षाएं चलाती है।



राजस्थान के डाबडी गांव में क्लास



राजस्थान के डाबडी गांव में क्लास

लेकिन ये सब इतना आसान नहीं था। एक अति सामान्य परिवार से आए सुरेंद्र पर काफी दबाव था। परिवार और दोस्तों में बहुत से लोग सोचते थे कि सुरेंद्र का ये निर्णय एक महीने या फिर कुछ दिन बुखार था जो जल्द ही दूर हो जाएगा। एक कार्पोरेट नौकरी या एम.टेक डिग्री में शामिल होने के लिए परिवार और साथियों के निरंतर तर्कों ने सुरेश को हमेशा एक धक्का दिया। लेकिन सुरेंद्र का मानना था कि वो उन मुद्दों को सुलझाने के लिए हमेशा अपने मस्तिष्क का सही उपयोग कर सकते हैं जो बड़े पैमाने पर नजरअंदाज किए जा रहे हैं। राजस्थान के ग्रामीण इलाके में एक गांधी फेलो के रूप में काम करने के दो साल बाद वो अपने घर रेवाड़ी लौट गए और वहां पर बच्चों की शिक्षा पर काम करने लगे।

योरस्टोरी से बातचीत में सुरेंद्र ने बताया, फेलोशिप के पूरा होने के बाद मैं अपने शहर रेवाड़ी में वापस चला गया और नवोदय विद्यालय परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने में छात्रों को प्रेरित करने लगा। उन्हें प्रशिक्षण देने की ही शुरुआत की। निरंतर चुनौतियों के बीच मैंने खुद से प्रश्न पूछा कि केवल सरकारी स्कूलों के साथ काम क्यों करना और केवल बुद्धि से तीव्र छात्रों को ही क्यों लेना है? मुझे इस बात का विश्वास था कि हर आईक्यू वाले बच्चों को उनके हिसाब से ट्रेनिंग की जरूरत है। ये बच्चे भी अच्छा परफॉर्म करेंगे जब इन बच्चों का किसी प्रतियोगी परीक्षाओं में चुनाव होगा। युवा स्वयंसेवकों के साथ कार्य करने ने मुझे सिखाया है कि किसी भी स्थिति में व्यावहारिक दृष्टिकोण है और प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे विकास के अगले चरण में हो सकता है। कभी भी समाप्त न होने वाली ताकत और ऊर्जा ने मुझे इससे आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा दी है।





रेवाड़ी में वॉलंटियर ओरिएंटेशन



रेवाड़ी में वॉलंटियर ओरिएंटेशन

योरस्टोरी से बातचीत में सुरेंद्र बताते हैं, जैसा कि मैं सुरेंद्र से "भैया" बनने की यात्रा को वापस देखता हूं, मुझे एक फ्लैशबैक दिखाई देता है। मैं रेवाड़ी के पास एक छोटे से गांव में पैदा हुआ था जहां पिछली पीढ़ी देश के लिए लड़ाई लड़ी थी। गांव के एक छोटे विद्यालय में पढ़ाई शुरू की और फिर माध्यमिक विद्यालय के लिए 5 किलोमीटर दूर पढ़ने जाता था। माध्यमिक विद्यालय की यात्रा की दूरी मेरे विज्ञान अवधारणाओं और सामुदायिक संरचनाओं को समझने की लैबोरेटरी बन गई। किसी भी विज्ञान उत्साही की तरह मैंने भी एक इंजीनियर बनने का सोचा। कोटा से कोचिंग करने के बाद मैं वी.आई.टी. वेल्लोर पहुंच गया। वहां से अपनी मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। यहां मेरे मन को भारत के बाकी हिस्सों में प्रदर्शन का मौका मिला। मैं पूरे चार सालों में एक औसत छात्र था। लेकिन फिर भी मुझे एक विशिष्ट पहचान के रूप में देखा जाता है क्योंकि मेरी सिद्धांतों को प्रयोगशालाओं में व्यावहारिक रूप से काम करने में सक्रिय रुचि थी।



क्लास में सवाल पूछता बच्चा



क्लास में सवाल पूछता बच्चा

सुरेंद्र जैसे नौजवान ही दुनिया को आगे बढ़ा रहे हैं। वो उस संकल्पना को पोषित कर रहे हैं, जहां केवल अच्छी नौकरी पा जाना ही अंतिम उद्देश्य नहीं होता बल्कि एक समाज के काम आ सकने वाले एक सार्थक जीवन को ही उचित माना जाता है। शिक्षा ही समाज में बदलाव की पहली कड़ी है और जब बिना वर्ग भेद के सभी बच्चे एकाग्र होकर पढ़ाई करेंगे तो तस्वीर यकीनन सुधरेगी।

ये भी पढ़ें: **हावर्ड से पढ़ी यह गुजराती महिला, छोटे स्टार्टअप्स के लिए बनी मसीहा**

यदि आपके पास है कोई दिलचस्प कहानी या फिर कोई ऐसी कहानी जिसे दूसरों तक पहुंचना चाहिए, तो आप हमें लिख भेजें editor_hindi@yourstory.com पर। साथ ही सकारात्मक, दिलचस्प और प्रेरणात्मक कहानियों के लिए हमसे फेसबुक और ट्विटर पर भी जुड़ें...

TAGS

- शख्सियत
- विविध
- एसआरआई
- रेवाड़ी
- SRI-REWARI
- SURENDER-YADAV
- सुरेंदर-यादव



प्रज्ञा श्रीवास्तव
IIMC दिल्ली से पत्रकारिता की एबीसीडी सीखी। नेटवर्क-18 और इंडिया टुडे के लिए दो साल तक काम किया। घूमने का जुनून है। इस जुनून को chalatmusaaafir.in पर देखा जा सकता है। देश के कोने-कोने में जाकर वहां की विरासत और खासियत को सामने लाने का सपना है।

0 Comments

Sort by Oldest



Add a comment...

Facebook Comments Plugin

RELATED STORIES

शख्सियत

यह ऑटो ड्राइवर रात में अपने ऑटो को बना देता है एंबुलेंस, फ्री में पहुंचाता है अस्पताल

YOURSTORY हिन्दी

DECEMBER 07, 2017

पतंजलि-सोलर

सोलर नमस्कार! योग और आयुर्वेद के बाद सोलर प्रॉडक्ट बनाने की तैयारी में बाबा रामदेव

YOURSTORY हिन्दी

DECEMBER 07, 2017

STORIES BY प्रज्ञा श्रीवास्तव

डॉक्ट्रोलॉजी

क्या प्रदूषण से बढ़ जाता है हड्डी फ्रैक्चर का खतरा?

प्रज्ञा श्रीवास्तव

DECEMBER 07, 2017

ग़ज़ल-सम्राट

दिलचस्प

कॉमेडी के उस बादशाह की कहानी जिनकी रहमदिली का एहसान अमिताभ बच्चन आ...

प्रज्ञा श्रीवास्तव

DECEMBER 07, 2017

दिलचस्प

एक ऐसा गज़लकार जिनकी गज़लों ने मोहब्बत के दर्द में भी किया राहत का काम

प्रज्ञा श्रीवास्तव
DECEMBER 07, 2017

हिंदी सिनेमा में खांटी जनता के लिए फिल्में बनाने वाले बेहतरीन निर्देशक

प्रज्ञा श्रीवास्तव
DECEMBER 07, 2017

- ABOUT US
- TEAM YS
- FAQS
- PRIVACY
- JOBS@YS
- TESTIMONIALS
- DISCLAIMER
- CODE OF CONDUCT
- TERMS & CONDITIONS